Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ संकष्टी चतुर्थी व्रति कथा ॥

॥ ॐ गं गणपतये नमः ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ वक्रतुण्ड संकष्टी का प्रसंग ॥

संकष्टी की कथाएँ चंद्र मास के अनुसार बदलती हैं। यह कार्तिक कृष्ण चतुर्थी की वक्रतुण्ड संकष्टी में कही जाने वाली कथा का संक्षिप्त रूपांतरण है।

कथा में आता है कि एक समय वृत्रासुर और अन्य असुरों के कारण देवता संकट में पड़ गए। वे सहायता माँगने भगवान विष्णु के पास पहुँचे। विष्णुजी ने बताया कि असुर समुद्र के सहारे सुरक्षित हैं और इस बाधा को दूर करने के लिए अगस्त्य ऋषि की सहायता उपयोगी होगी।

देवताओं ने अगस्त्य ऋषि से प्रार्थना की। ऋषि ने उन्हें आश्वासन तो दिया, पर इतने विशाल समुद्र के सामने उनके मन में विचार उठा कि यह कार्य कैसे पूरा होगा। उन्होंने श्रीगणेश का स्मरण किया और संकष्टी चतुर्थी का व्रत तथा पूजन किया।

कथानुसार उनकी साधना से प्रसन्न होकर गणेशजी ने उन्हें साहस और सामर्थ्य का आशीर्वाद दिया। अगस्त्य ऋषि ने देवताओं की सहायता की और संकट का सामना करने का मार्ग खुला।

यह कथा श्रीगणेश को विघ्न दूर करने वाले देवता के रूप में स्मरण करती है। इसमें कठिन परिस्थिति में धैर्य, विचार और सहायता के साथ आगे बढ़ने का संदेश है।

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ कथा-पाठ और उसका भाव ॥

व्रत कथा कब पढ़ें

संध्या में गणेश पूजा के बाद संकष्टी की कथा पढ़ी या सुनी जाती है। फिर अपने स्थान के चंद्रोदय पर चंद्रमा को अर्घ्य देने की परंपरा है। परिवार की रीति के अनुसार आरती और प्रसाद भी करें।

महीने के अनुसार नाम

कृष्ण पक्ष की प्रत्येक चतुर्थी पर संकष्टी होती है, लेकिन संबंधित गणेश स्वरूप और कथा के नाम बदलते हैं। उदाहरण के लिए भालचंद्र, एकदंत, गजानन और वक्रतुण्ड संकष्टी की कथाएँ अलग मिलती हैं।

कथा की सीख

अगस्त्य ऋषि के प्रसंग में संकट के समय आशा और संयम बनाए रखने का भाव प्रमुख है। कथा को धार्मिक परंपरा के रूप में पढ़ें; किसी बीमारी या कठिनाई के समाधान का निश्चित वादा न मानें।

यदि किसी महीने की अलग कथा घर या मंदिर में प्रचलित हो तो उसे उसी महीने के अनुसार पढ़ें। अंत में अपने परिवार और सभी के कल्याण की प्रार्थना करें।

॥ ॐ गं गणपतये नमः ॥